ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 153-156**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

बाल गंगाधर तिलक के सामाजिक–आर्थिक विचारों की अवधारण
(The concept of socio-economic ideas of the Bal Gangadhar Tilak)

डॉ0 अरबिन्द कुमार
(NET JRF), शोध अध्येत्री, देलही स्कूल ऑफ इकोनामिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Received-25.01.2026, Revised-01.02.2026, Accepted-08.02.2026 E-mail: kritigeobhu@gmail.com

सारांशः बाल गंगाधर तिलक भारतीय राष्ट्रवादी, समाज सुधारक तथा स्वतन्त्रता सेनानी थे, लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन में उनके आर्थिक विचार भी काफी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे, तिलक के आर्थिक विचार का उद्देश्य भारतीय जनमानस के स्थिति में सुधार करना और ब्रिटिश सरकार के औपनिवेशिक आर्थिक शोषणवादी नीतियों का विरोध करना था। उनका मानना था कि भारत सामाजिक–आर्थिक रूप से तभी सम्पन्न राष्ट्र बन सकता है जब देश इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भर राष्ट्र बनेगा तथा निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होगा। इसके लिए देश में स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना होगा तथा स्वदेशी उद्योगों का विकास करना होगा और देश में सम्पत्ति का न्यायसंगत वितरण एवं ब्रिटिश सरकार की शोषणवादी नीतियों के विरूद्ध लोगों में जनचेतना आयेगी। तब जा के देश में सर्वांगीण एवं समुचित विकास होगा और भारत विकास के मार्ग पर अग्रसर होगा।

कुंजीभूत शब्द– बाल गंगाधर तिलक, सामाजिक, आर्थिक, विकास, ब्रिटिश, आत्मनिर्भर, राष्ट्र, भारतीय राष्ट्रवादी, समाज सुधारक।

प्रस्तावना– बाल गंगाधर तिलक का बचपन का नाम केशव गंगाधर तिलक था। वे एक भारतीय राष्ट्रवादी, वकील, शिक्षक, समाज सुधारक तथा स्वतन्त्रता सेनानी थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने अपने नये–नये विचार रखें और क्रान्तिकारी प्रयत्न किया था जिस कारण से अंग्रेज उन्हें "भारतीय अशान्ति के पिता" भी कहते थे। तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को ब्राह्मण परिवार में महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के चिखली नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचन्द्र तिलक जो संस्कृत के विद्वान थे तथा माता पार्वती बाई गंगाधर थी। तिलक ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा रत्नागिरी से प्राप्त किया और बाद में पुणे के डेक्कन कॉलेज से गणित एवं संस्कृत में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। तिलक जब सोलह वर्ष के थे, तभी उनका विवाह तापीबाई से साथ वर्ष 1871 में हो गया था, शादी के बाद उनकी पत्नी का नाम बदलकर सत्यभामाबाई कर दिया गया। तिलक का मानना था कि अच्छे चरित्र का निर्माण करने के लिए धार्मिक शिक्षा आवश्यक है, क्योंकि उच्च धार्मिक सिद्धान्तों के आधार पर ही व्यक्ति बुरे काम से दूर रहता है और अच्छे तथा सृजनात्मक कार्य करता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि बालगंगाधर तिलक एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। तिलक के अन्दर धार्मिक भावना तथा समाज सुधार की भावना अपने माता–पिता से विरासत के रूप में मिला था। तिलक दर्शन के क्षेत्र में अद्वैतवाद तथा वेदान्त को मानते थे तथा अवतारवाद में विश्वास करते थे। तिलक के अनुसार "ईश्वर तथा आत्मा के स्वरूप का ज्ञान ही मनुष्य के मोक्ष प्राप्ति का साधन है।" तिलक के दृष्टिकोण में "धर्म राष्ट्रीयता का एक तत्व है" और राष्ट्रीयता धर्म के साथ जुड़ी है। धार्मिक विचारों ने उनकी राष्ट्रीय शिक्षा की अवधारणा को भी प्रभावित किया है। तिलक के धार्मिक शिक्षा का तात्पर्य साम्प्रदायिक अथवा साम्प्रदाय विशेष के धर्म की शिक्षा से नहीं था, उनके अनुसार स्कूलों में हिन्दूओं को हिन्दू धर्म की शिक्षा और मुसलमानों को मुस्लिम धर्म की शिक्षा दी जानी चाहिए। और यह भी शिक्षा दी जानी चाहिए कि मनुष्य को दूसरे धर्म के प्रति भेद–भाव को भूलकर क्षमा करने का गुण विकसित हो अर्थात सभी धर्मों का समान रूप से सम्मान होनी चाहिए। तिलक हिन्दूओं को मुस्लिम पर्वों में और मुसलमानों को हिन्दू पर्वों में शामिल होना चाहिए, जिससे देश में हिन्दू–मुस्लिम एकता स्थापित हो सके, जो देश के समाजिक–आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। तिलक का मानना था, कि धार्मिक पर्वों के माध्यम से जनमानस को जागृत किया जा सकता है, इसके लिए उन्होंने रामलीला और दुर्गा पूजा की तरह महाराष्ट्र में गणेश चतुर्थी उत्सव का पर्व का शुभारम्भ किया था, जिससे लोगों में एकता और राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो सके। तिलक गीता रहस्य के माध्यम से लोगों को उपदेश दिया और यह बताया है कि निष्काम कर्म योग ज्ञान, भक्ति तथा कर्म के बीच समन्वय स्थापित किया जाए तथा मानव मूल्यों को उँचा उठाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया था। उनका मानना था कि हिन्दू धर्म अपने आप में एक श्रेष्ठ धर्म है, और हिन्दूओं को हिन्दू धर्म छोड़ इसाई और मुस्लिम बनने की कोई आवश्यता नहीं है। वे धर्म परिर्वतन का विरोध करते थे और सभी भारतीयों को अपने इच्छानुसार धार्मिक रीति–रिवाजों में भाग लेने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। तिलक ने खुद ही गीत के साथ–साथ कुरान तथा बाइबिल का अध्ययन किया था और सभी धर्म ग्रन्थों की मुख्य बातों को एकत्र कर समाज के सामने लाने का प्रयास किया था ताकि सभी धर्मों के बीच समन्वय स्थापित हो सके।

अध्ययन का उद्देश्य–

- बाल गंगाधर तिलक का संक्षिप्त जीवन परिचय।
- बाल गंगाधर तिलक के सामाजिक–आर्थिक विचारों का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना–

- तिलक का जीवन उच्च धार्मिक, संस्कारी, सामाजवादी एवं राष्ट्रवादी था।
- भारत को आत्मनिर्भर बनाने में तिलक के सामाजिक–आर्थिक विचार एक सशक्त माध्यम था।

अध्ययन विधि– प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक तथा विश्लेषण विधि के माध्यम से द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक समंकों के लिए विषय से सम्बन्धित पुस्तक, पत्र–पत्रिकाओं, सामाचार पत्र आदि स्रोतों से संकलित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन– किसी के बारे में अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है, कि अध्ययन कर्ता द्वारा पूर्व में किए गये अध्ययनों की समीक्षा के क्रम में विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्ध तथा इन्टरनेट के माध्यम से प्राप्त किए गये साहित्य का अध्ययन किया गया है, जिसमें बाल गंगाधर तिलक के जीवन से जुडी सामाजिक–आर्थिक विचारों की गहनता से अध्ययन किया गया है। इसी क्रम में उनका संक्षेप में विवरण निम्न है।

• **डॉ. बी. एल. फाड़िया (2022):** अपनी पुस्तक "भारतीय राजनीतिक चिन्तन" में बाल गंगाधर तिलक के जीवन परिचय देते हुए कहां कि तिलक एक कर्मायोगी, धार्मिक प्रवृति, समाज सुधारक तथा महान राष्ट्रवादी नेता थे। तिलक ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में बाल विवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया था। तिलक स्त्री शिक्षा के समर्थक माने जाते थे, उनका मानना था कि जिस समाज की स्त्री पढ़ी–लिखी होती है उस समाज का विकास काफी अच्छे तरीके से होता है बच्चें संस्कारी होते हैं और

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

एक अच्छे नागरिक से एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण होता है। तिलक श्रीमती एनी बेसेन्ट के साथ मिलकर स्वराज्य आन्दोलन का आरम्भ किया और अपने राजनीति चेतना में स्वराज्य शब्द की व्याख्या की थी और भारतीयों को इसका मंत्र दिया कि "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा।"

• **डॉ. ओम् प्रकाश गाबा (2023):** अपनी पुस्तक "भारतीय राजनीति विचारक" में बताया है कि बाल गंगाधर तिलक को राष्ट्रवाद का भगीरथ ऋषि भी कहा भी कहां जाता है। स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए तिलक ने तर्क दिया है कि जब तक हम ब्रिटेन की बनी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं करते हैं, तब तक हमारा राष्ट्र आत्मनिर्भर नहीं हो सकता है। यदि हम ब्रिटेन में बनी वस्तुओं को खरीदना बन्द कर दें तो ब्रिटिश सरकार के व्यावसायिक हितों की हानि होगी, जो ब्रिटिश सरकार की जड़ों को हिला देगी और भारत में बने वस्तुओं की मांग बढ़ जायेगी, जिससे भारत में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिलेगा और भारत आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर एवं स्वालम्बी बनेगा। तिलक ने स्वदेशी को केवल आर्थिक अस्त्र के रूप में ही नहीं माना है, बल्कि यह सामाजिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक अस्त्र भी है, जो ब्रिटिश सरकार के शासन से मुक्ति का साधन है।

• **डॉ. कुलदीप मिश्र (2017):** अपनी लेख में "लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के सामाजिक एवं धार्मिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन" में लिखा है कि तिलक के माता–पिता धार्मिक प्रवृति के थे, जिसका प्रभाव तिलक के जीवन में देखने को मिलता है। तिलक का मानना था कि धर्म ही मोक्ष का साधन है और चरित्र का निर्माण करने के लिए धार्मिक शिक्षा अवश्यक है। तिलक के धार्मिक शिक्षा का तात्पर्य साम्प्रदायिक अथवा साम्प्रदाय विशेष के धर्म की शिक्षा से नहीं था, उनके अनुसार स्कूलों में हिन्दूओं को हिन्दू धर्म और मुसलमानों को इस्लाम की शिक्षा दी जाए और वहा यह भी शिक्षा जाए कि मनुष्य को दूसरे धर्मों के भेद–भाव को भूलकर क्षमा करना चाहिए। तिलक ने स्त्री शिक्षा एवं विधवा विवाह का समर्थन किया था। जिस समाज की स्त्री शिक्षित होती है उस समाज का तिव्र गति से विकास होता है।

• **एन. जी. जोग (2022); अपनी लेख में "आधुनिक भारत के निर्माता:** लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक', का प्रारंभिक जीवन उनके शिक्ष–दीक्षा पर प्रकाश डाला है। इसमें उन्होंने तिलक को एक आदर्श विद्यार्थी नहीं कहा कहा जा सकता है, क्योंकि स्कूल की बंधी–बधाई अध्ययन प्रणाली को न मानकर, अपनी रुचि के अनुसार ही विषय को चुनकर अध्ययन करना तिलक की प्रथमिकता होती।

बाल गंगाधर तिलक के सामाजिक विचारों का अध्ययन– समाज सुधारकों के श्रेणी में बाल गंगाधर तिलक का नाम महत्वपूर्ण स्थान है। तिलक समाज सुधार के क्षेत्र को स्वीकार करते थे तथा अच्छे और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण के लिए समाज द्वारा समाज सुधार किया जाना चाहिए, इससे सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण होता है। तिलक का मानना था, कि समाज में परिर्वतन सामाजिक परिर्वतन के द्वारा ही संभव है और यह परिर्वतन समाज में जागरूकता एवं शिक्षा के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इस कारण से तिलक जन शिक्षा एवं महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देते थें। तिलक की धारण थी कि समाज में सुधार की भाव लोगों के अन्दर होनी चाहिए और सुधारों की बात उस समय करनी चाहिए जब लोग अपने जीवन में सुधार चाहते हों अथवा सुधार के लिए किया गया प्रयास सफल नहीं होता है। उन्होंने जन जागृति के माध्यम से ही सामाजिक सुधारों को व्यवहारिक रूप देने का प्रयास किया था। तिलक बुनियादी सामाजिक सुधार के क्षेत्र में विदेशी शासकों के हस्तक्षेप और उनके साथ सहयोग को कट्टर विरोधी थे। देश में सामाजिक शिक्षा एवं जागरूकता द्वारा धीरे–धीरे समाज में सुधार किया जा सकता है अपने इन्हीं विचारों के कारण तिलक ने बाल विवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया था, हालांकि उनका विवाह भी बचपन में हुआ था, जिसका उन्होंने विरोध भी किया था। किन्तु पिता की तबियत खराब होने के कारण उनकी बात मान कर विवाह करना पड़ा। इम्परीयल कौन्सिल ने 9 जनवरी 1891 को एक बिल प्रस्तुत किया था, जिसमे लड़कियों की शादी की उम्र 10 वर्ष से बढ़ाकर 12 वर्ष करने का प्रावधान किया गया था। तिलक ने इसका विरोध किया और कहा कि लड़कियों की शादी 12 वर्ष में नहीं बल्कि 16 वर्ष में तथा लड़कों की शादी 20 वर्ष में होनी चाहिए। क्योंकि बचपन में विवाह कर देने से लड़के तथा लड़कियों की पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती हैं, और बाल्यावस्था में पारिवारिक जिम्मेदाारियों को निभा नहीं पाते हैं। दूसरी तरफ कम उम्र में शादी होने से परिवार की जिम्मेदारियां बढ़ने से परिवार में रोजगार एवं आय को लेकर तनाव भी बढ़ने लगता है और परिवार में अशान्ति की स्थिति उत्पन होने लगती है जिससे समाज में गरीबी एवं बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है। ऐसे में यदि पुरूष वर्ग इन समस्यओं का समाधन नहीं कर पाते हैं तो अनेक प्रकार के बिमारियों से ग्रसित हो जाते हैं अथवा दुर्घटना के कारण असमय मृत्यु हो जाती है जिससे बड़ी संख्या में महिलाएं विधवा हो जाती है। विधवा महिलाओं को पूरा जीवन विधवा बन के ही जीना पड़ता था। उस समय का समाज ऐसी लड़कियों को हीन भावना से देखता था तथा उनको किसी भी प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृति कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति नहीं देता था। विधवा महिलाओं को अनेक प्रकार के सामाजिक–आर्थिक अत्याचार का सामना करना पड़ता था और जीवन कुरूपता से ब्यतित करना पड़ता था। तिलक इसे देख कर विधवा विवाह का समर्थन किया और विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयास किया था और समाज में विधवाओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जाए उन पर किसी भी प्रकार का अत्याचार तथा भेद–भाव न किया जाए और समाज में उनको हीन भावना से न देखा जाए। यदि कोई पुरूष दोबार विवाह करना चाहता है, तो उसे विधवा से ही विवाह करनी चाहिए। तिलक ने जन शिक्षा पर विशेष जोर दिया था उनका मानना था कि जब तक जन शिक्षा को बढ़ावा नहीं दिया जायेगा तब तक देश में जागृति नहीं आयेगी और देश सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़ा ही रहेगा। यदि देश को स्वतंत्र कराना है, तो जन शिक्षा आवश्यक है। जन शिक्षा से ही लोगों में जागरूकता आती है और राष्ट्र का विकास एवं नव निर्माण होता है। जन शिक्षा में उन्होंने महिला शिक्षा का प्रबल समर्थन किया था। उनका मानना था कि जिस परिवार में महिला शिक्षित होती है, उस परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा और वह अपने बच्चों को भी अच्छे संस्कार देती है। महिला के शिक्षित होने से भावी राष्ट्र के नागरिक में उच्च संस्कार एवं राष्ट्र निर्माण का गुण विकसित होता है। बाल गंगाधर तिलक दहेज प्रथा एवं पर्दा प्रथा का विरोध उतना नहीं किया जितना कि गोपाल कृष्ण गोखले, महादेवी गोविंद रानाडे, ज्योतिबा फुले, महात्मा गांधी तथा अम्बेडकर ने किया था, क्योंकि तिलक हिन्दू संस्कृति एवं परम्परा से जुड़े थे। भारतीय किसान एक तरफ अंग्रेजों के भारी भूमिकर, साहूकार एवं महाजनों के कर्ज में दबे रहते थे, वही दहेज प्रथा के कारण लड़कीयों कि विवाह लिए लिया गया कर्ज का बोझ बढ़ता रहता था जिससे परिवार में गरीबी, बेरोजगारी एवं आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती थी, जिस कारण से परिवार में लड़की के जन्म में उतना खुशी नहीं होती थी जितना की लड़के के जन्म के समय होती थी।

बाल गंगाधर तिलक के आर्थिक विचारों का अध्ययन– बाल गंगाधर तिलक मुख्य रूप से अपने सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों के लिए जाने जाते हैं, लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन में उनके आर्थिक विचार भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। तिलक के आर्थिक

विचार का उद्देश्य भारतीय जनमानस की स्थिति में सुधार करना तथा ब्रिटिश सरकार के आर्थिक शोषण का विरोध करना था। तिलक के प्रमुख आर्थिक विचारों को निम्न विन्दूवार देख सकते हैं।

• बल गंगाधर तिलक के अनुसार ब्रिटिश सरकार की नीतियाँ भारतीय कृषि, उद्योग एवं व्यापार को हानि पहुँचा रही थी, जिस कारण से देश आर्थिक रूप से कमजोर हो रहा था तथा देश में गरीबी बेरोजगारी की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। ब्रिटिश शासक भारतीय सम्पति को लूटकर अपने देश ले जा रहे थे, जिससे भारत से बड़ी मात्रा में धन का निष्कासन, पलायन एवं संपत्ति का क्षरण हो रहा था जिसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा नाकारात्मक प्रभाव पड़ा रहा था। ब्रिटिश नीतियों के कारण भारत की पारंपरिक आर्थिक संरचना बर्बाद हो रही थी तथा भारतीय अर्थव्यवस्था औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तिक हो रही थी, जो ब्रिटेन के हितों की पूर्ति करता था और भारतीय संसाधनों का शोषण करना था। इस प्रणाली ने ब्रिटेन के उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करना और ब्रिटेन के निर्मित वस्तुओं का उपभोक्ता बना दिया था। भारतीय कच्चें माल का निर्यातक और ब्रिटेन के तैयार माल का आयातक बना दिया जिससे भारतीय उद्योगों के विकास पर विपरित प्रभाव रहा था और ब्रिटेन से सस्ते औद्योगिक वस्तुओं के आयात ने भारतीय हस्तशिल्प एवं कारीगरी उद्योगों को भी प्रतिस्पर्धा के कारण हानि भी होती थी, वहीं भारतीय किसानों पर अधिक मात्रा में भू–राजस्व लगाने से किसान कर्ज में डूबें रहते थे, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी थी। ब्रिटिश, ब्रिटेन के औद्योगिक विकास हेतु भारत से कपास, जूट, तथा नील जैसे व्यवसायिक खेती से भारी मात्रा में आयात करते थे, जिसके कारण अनियंत्रित व्यवसायिक खेती से मिट्टी की उर्वराशक्ति भी गिरती जा रही थी। यही सब बाल गंगाधर तिलक को अच्छा नहीं लगता था इसलिए उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशवाद के नितियों का घोर विरोध किया और कहां कि यदि भारत के आर्थिक स्थिति में सुधार करना है तथा देश को सम्पन्न एवं स्वतत्रंत राष्ट्र बनाना होगा, तभी ब्रिटिश शासकों के इस प्रकार की गतिविधियों पर रोक लग सकती है।

• बाल गंगाधर तिलक ने स्वदेशी आन्दोलन का समर्थन किया था। "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का नारा दिया था जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रसिद्ध नारा था। वे भारत को स्वतंत्र एवं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनान चाहते थे। स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने तथा विदेशी वस्तुओं का विरोध करते थे। उनका कहना था कि स्वदेशी अपनाने से देश के लोगों में स्वदेश एवं राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत होती है तो दूसरी ओर लोगों को देश में ही स्थानीय स्तर पर रोजगार मिलता है। और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा मिलता है जिससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

• बाल गंगाधर तिलक का मानना था कि यदि देश का समुचित विकास चाहते है, तो लोगों को शिक्षित करना अति आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा ही एक मात्र ऐसा हथियार है जो देश की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को बदल सकता है। देश के लोगों को शिक्षा के साथ–साथ व्यावसायिक शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा दी जाए। तकनीकी शिक्षा के माध्यम से छात्रों को आधुनिक तकनीकों से जुड़ी नौकरियों के लिए तैयार करना है, जिसमे इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, प्रबन्धन और वस्तुकला जैसे क्षेत्र का विकास करना है। तकनीकी क्षिक्षा से छात्रों में व्यावहारिक ज्ञान, व्यावसायिक कौसल, नवाचार का विकास होता है। तकनीकी कौशल वाले लोगों की मांग देश में लगातार बढ़ती जा रही है, जिससे देश के युवाओं के लिए नये–नये रोजगार के अवसर प्राप्त होगे तथा अनके आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा और भारत आत्मनिर्भर बन सकेगा।

• बाल गंगाधर तिलक ब्रिटिश सरकार की कर नीतियों से भी काफी असन्तुष्ट रहते थे, उनका मानना था कि ब्रिटिश सरकार भारतीय किसानों पर उनके उत्पादन क्षमता से अधिक कर लगाती है, जिससे भारतीय किसानों की आर्थिक स्थिति दिन–प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है। भारतीय किसान हमेशा साहूकार, महाजनों एवं जामिदारों के कर्ज में डूबें रहते है और कर्ज में ही मर जाते है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं हो पाती है। इस कारण से बाल गंगाधर तिलक अंग्रेजों के कृषि कर का पुरजोर विरोध करते थे और उसमें सुधार करने की बात करते थे।

• बाल गंगाधर तिलक बहुत अच्छी तरह से जानते थे, कि भारत की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। अंग्रेजों द्वारा भारत का काफी शोषण किया गया है, जिसके कारण से देश आर्थिक रूप से कमजोर हो गया है। यहा श्रम की अधिकता है, एवं पूंजी की कमी है जिससे देश में गरीबी एवं बेरोजगारी बढ़ती जा रही है, ऐसे में यदि भारत को सशक्त बनाना है, तो देश में श्रम प्रधान तकनीकी का उत्पादन करना चाहिए। इससे यह होगा कि कम पूँजी से अधिक लोगों को रोजगार दिया जा सकता है। इसके लिए देश में लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाय। लघु एवं कुटीर उद्योगों से कम पैसे में अधिक लोगों को स्थानिय स्तर पर रोजगार उपलब्ध होगा और लोगों का गांव से शहर की ओर पलायन रूकेगा, जिससे देश में बढ़ती शहरी करण की समस्या भी समाप्त होगी तथा लोग अपने घर परिवार में रह कर अपने आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को सुधार कर सकते हैं।

• तिलक का कहना था कि भारत में सम्पत्ति का वितरण भी समान एवं न्यायसंगत नहीं है। देश में कुच्छ लोगों के पास अथाह सम्पति है, जिनकी कई पीढियां बैठकर खा सकती है और वे उसका सही से देख–रेख भी नहीं कर पाते हैं और दूसरी ओर कुच्छ लोगों के पास इतना भी सम्पत्ति नहीं है कि वे दो वक्त का सुचारू रूप से भोजन कर सके। अतः देश में सम्पत्ति का न्यायपूर्ण वितरण आवश्यक है, तभी देश के सभी वर्गों को समान अवसर मिलेगा तथा समान विकास भी होगा और देश में पूंजी के केन्द्रीकरण पर भी लगाम लग सकता है। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि बाल गंगाधर तिलक पूंजीवादी शोषण के विरूद्ध थे तथा भारत के समुचित एवं व्यवस्थित विकास के समर्थक भी थे।

निष्कर्ष– बाल गंगाधर तिलक के सामाजिक एवं आर्थिक विचार भारतीय राष्ट्रवाद के साथ काफी गहराई से जुड़ा था। उनका मानना था कि भारत इन क्षेत्रों में तभी सम्पन्न राष्ट्र बन सकता है, जब देश सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में आत्मनिर्भर राष्ट्र बनेगा तथा देश इन क्षेत्रों में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होगा। इसके साथ ही देश में स्वदेशी उद्योगों का विकास हो, सम्पत्ति का न्यायसंगत वितरण हो, और लोगों में ब्रिटिश सरकार की शोषणवादी नीतियों के विरूद्ध जनचेतना आए, भारतीय समाज में बाल विवाह पर पूर्णरूप से प्रतिबन्ध हो एवं विधवा विवाह की अनुमति हो, स्त्री शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो और भारतीय समाज में महिलाओं स्थिति सशक्त एवं आत्मनिर्भर हो और उनका उत्पादन वितरण में सक्रिय सहभागीता हो, देश में तकनीकी शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि कम संसाधनों में अधिक लोगों को रोजगार मिल सके, जिससे देश के लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बदल सके तब जाके देश विकसी राष्ट्री बन सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बाल गंगाधर तिलक न केवल एक राष्ट्रवादी, समाज सुधारक तथा स्वतन्त्रता सेनानी ही थे, बल्कि राष्ट्रीय आन्दोलन में उनके सामाजिक–आर्थिक विचार भी काफी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. फाड़िया बी.एल. (2022), 'भारतीय राजनीतिक चिन्तन', साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. चौबे, एस.पी एवं चौबे, अखिलेश (2007), 'एजूकेशनल थिंकर्स', नीलकमल पब्लिकेशन, हैदराबाद।
3. जोग, एन.जी. (2022), "आधुनिक भारत के निर्माता– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक', सूचना एवं प्रसारण मत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. गाबा, ओम प्रकाश (2022),'भारतीय राजनीति विचारक', नेशनल पेपरबैक्स, दरियागंज नई दिल्ली।
5. गुप्ता, लक्ष्मी नारायण (1992),'महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्ष शास्त्री', कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. बाल गंगाधर तिलक (1914), गीता रहस्य, श्रीमद् भागवत गीता।
7. ओड, लक्ष्मी लाल (1914), शिक्षा की दार्शनिक पृष्टभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
8. देसाई, ए.आर. (2000), 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि', मैकमिलन इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली।

****